राष्ट्रबोध संस्कृति एवं साहित्य

सम्पादक

डॉ. इन्दुशेखर 'तत्पुरुष' • डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी

प्रतिलिप्याधिकार लेखक एवं प्रकाशक के अधीन सुरक्षित है। इनकी पूर्व लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग का पुनः प्रकाशन वर्जित है।

राष्ट्रबोध, संस्कृति एवं साहित्य

ISBN : *978-81-86064-95-5*

© : लेखक

मूल्य : छःसौ रुपये

संस्करण : 2019

प्रकाशक : अंकुर प्रकाशन
1/1 कांजी का हाटा, गायत्री मार्ग,
उदयपुर (राज.) 313001
फोन : (0294) 2417094, 2417039
ईमेल : ankurprakashan15@gmail.com

आवरण : निहारिका सिंह राठौड़

टाईपसेटिंग : *R&R Solution,*
Udaipur (Raj.), India
9413762719

Rastrabodh, Sanskriti Evam Sahitya (Hindi Literature)
By : Dr. Indushekhar "Tatpurush", Rs. 600-00
Dr. Rajendra Kumar Singhvi

पुरोवाक्

राष्ट्र और संस्कृति पर विचार करते हुए हमें सर्वप्रथम यह बात समझ लेनी चाहिए कि विगत तीन शताब्दियों नें निर्मित आधुनिक पश्चिमी राष्ट्रवाद की अवधारणा और भारत में हजारों वर्षों से चला आ रहा राष्ट्रबोध एक ही वस्तु नहीं है। यही कारण है कि यहाँ आधुनिक राष्ट्रवाद के समान्तर भारतीय राष्ट्रीयता की धारणा को "राष्ट्रवाद" न कहकर "राष्ट्रबोध" कहा जा रहा है। ये दोनों संज्ञाएँ राष्ट्रीयता के दो भिन्न स्वरूपों को प्रतिपादित करती हैं। अपने देश के प्रति उत्कट अनुराग की भावना यद्यपि दोनों तरह की राष्ट्रीयताओं में उभयनिष्ठ है, किन्तु इन के मूलाधार, प्रक्रिया और परिणाम अलग–अलग हैं जिनकी विस्तृत और स्पष्ट विवेचना की जानी आवश्यक है। इसीलिए जहाँ अनेक विचारकों ने आधुनिक राष्ट्रवाद को विश्वशांति के लिए बाधक माना है वहीं उससे उलट भारतीय राष्ट्रबोध को वैश्विकता और विश्वबन्धुत्व के पोषक के रूप में देखा गया है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने जापान और अमेरिका प्रवास के समय वहाँ दिए गए व्याख्यानो में राष्ट्रवाद .का भर्त्सना करते हुए इसे अन्तर्राष्ट्रीयता का विरोधी बताया है तो दूसरी ओर महात्मा गांधी भारतीय राष्ट्रीयता और पश्चिमी राष्ट्रीयता के अन्तर को दृष्टि में रखते हुए यंग इंडिया (17.9.1925) में लिखते हैं–

"राष्ट्रवाद बुरी चीज नहीं है, बुरी है संकुचित वृत्ति, स्वार्थपरता और एकांतिकता जो आधुनिक राष्ट्रों के विनाश के लिए उत्तरदायी है। इसमें से प्रत्येक राष्ट्र दूसरे भी कीमत पर, उसे नष्ट करके, उन्नति करना चाहता है। भारतीय राष्ट्रवाद ने एक भिन्न मार्ग चुना। यह समूची मानवता के हित तथा उसकी सेवा के लिए स्वयं को संगठित करना यानी पूर्ण आत्माभिव्यक्ति की स्थिति को प्रकट करना चाहता है।" स्पष्ट है कि यहाँ गांधीजी– "भारतीय राष्ट्रवाद ने एक भिन्न मार्ग चुना"– कहकर इसे आधुनिक राष्ट्रवाद से पृथक् मानते हैं।

वेदों और प्रचीन वाङ्मय का गहन अध्ययन कर डॉ. रामविलास शर्मा भारतीय राष्ट्र के संबंध में लिखते हैं – "अथर्ववेद के दूरदर्शी कवि ने कहा था : **जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम् ।सहस्त्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ।।**– "बहुत तरह के धर्मो के मानने वाले, अनेक भाषा बोलने वाले जनसमुदाय को जैसा एक घर में कोई रहे, उस तरह धारण करनेवाली, जिसका नाश न हो, इससे स्थिर भूमि हजारों तरह पर मुझ

12. दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना 101
डॉ. विवेक शंकर

13. राष्ट्रीय चिंतन के परिप्रेक्ष्य में साहित्य का स्वरूप 119
डॉ. नवीन नन्दवाना

14. भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में आज के दौर का हिन्दी साहित्य 126
डॉ. अखिलेश चास्टा

15. संस्कृति और साहित्य का अन्तः संबंध 134
डॉ. राजेश कुमार जोशी

16. राष्ट्रोत्थान में संस्कृति व साहित्य की भूमिका 149
डॉ. रवीन्द्र कुमार उपाध्याय

17. साहित्य एवं संस्कृति का अटूट संबंध 154
डॉ. सरिता देवी शुक्ला

18. संत साहित्य में इतिहास एवं लोक संस्कृति 162
डॉ. नलिका बोहरा

19. वैश्वीकरण के युग में अधीर युवमन और आध्यात्मिक साहित्य की अपरिहार्यता 171
डॉ. विमलेश शर्मा

20. भारतीय साहित्य में सांस्कृतिक मूल्यबोध 181
डॉ. बलराम गुप्ता

21. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन और हिन्दी काव्य की राष्ट्रीय चेतना 192
डॉ. विमलेश मीणा

22. हिन्दी काव्य में अदृप्त स्वाधीन चेतना 201
राकेश कुमार खटीक

23. राष्ट्रीयता की लहर में साहित्य का योगदान 210
डॉ. हेमलता मीना

24. हिन्दी कविता की राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा में राष्ट्रीय बोध का स्वरूप 219
डॉ. कृष्णबलदेव सिंह राठौड़

25. राष्ट्रीय भावों की साधिकाः सुभद्रा कुमारी चौहान 225
डॉ. अंजु

26. हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल और राष्ट्रीयता की अवधारणा 235
डॉ. वन्दना बरमेचा

27. राष्ट्र की स्वतंत्रता और प्रेमचन्द की नारी 242
डॉ. रक्षा गोदावत

28. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के पुरोधा दिनकरः वैचारिकी और सामयिक संदर्भ 251
डॉ. मनोज कुमार पंड्या

29. सांस्कृतिक मूल्यों का नैरन्तर्य और रामस्नेही संप्रदाय 258
डॉ. महेश चन्द्र तिवारी

30. अज्ञेय की कविता में राष्ट्रीय–सांस्कृतिक संदर्भ 265
माधुरी शर्मा

31. साहित्य का लोकमंगल पक्ष एवं वर्तमान परिदृश्य 274
डॉ. विजयलक्ष्मी सालोदिया

32. सांस्कृतिक व राष्ट्रीय चिंतकः–कन्हैयालाल जी सेठिया 283
मंजु सारस्वत

33. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गज़ल साहित्य में सांस्कृतिक–बोध 291
डॉ. आदित्य कुमार गुप्ता – डॉ. रामावतार मेघवाल

34. प्रवासी जीवन और सांस्कृतिक संक्रमण 299
डॉ. प्राणु शुक्ला

35. हिन्दी गद्य साहित्य में राष्ट्र एवं संस्कृति का चित्रण 304
डॉ. गजेन्द्र भारद्वाज

31. दिनकर, कुरुक्षेत्र, पृ. 181
32. दिनकर, रश्मिरथी, पृ. 6
33. दिनकर, उर्वशी, पृ. 156
34. दिनकर, रेणुका, पृ. 109
35. दिनकर, कुरुक्षेत्र, पृ. 41
36. दिनकर, रश्मिरथी, पृ. 6
37. उपरिवत् पृ. 78
38. दिनकर, कुरुक्षेत्र, पृ. 134
39. उपरिवत, पृ. 149
40. दिनकर, नील कुसुम, पृ. 196
41. दिनकर, उर्वशी, पृ. 133

राष्ट्रीय चिंतन के परिप्रेक्ष्य में साहित्य का स्वरूप

डॉ. नवीन नन्दवाना
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

भारत नहीं स्थान का वाचक, गुण विशेष नर का है,
एक देश का नहीं, शील यह भू–मंडल भर का है।
जहाँ कहीं एकता अखंडित, जहाँ प्रेम का स्वर है,
देश–देश में वहाँ खड़ा भारत जीवित भास्वर है।

–नील कुसुम (दिनकर)

हिंदी साहित्य की विराट और अविरल परम्परा ने सदैव राष्ट्र, राष्ट्रीयता और संस्कृति को अपने केंद्र में रखा है। देश के विशाल भू–भाग के प्रत्येक क्षेत्र से समय–समय पर राष्ट्रीय व सांस्कृतिक चिंतन का स्वर मुखरित हुआ है। साहित्यकार की कलम ने भी इस चेतना के प्रवाह को द्विगुणित करने में अपना महत्मूल्य योगदान दिया है। हिंदी साहित्य का आधुनिक काल कई नई प्रवृत्तियों का श्रीगणेश करने वाला रहा है। आधुनिक काल में कवियों का ध्यान राष्ट्रीयता, सामाजिकता और धार्मिक चेतना की ओर भी गया। उन्होंने देश व समाज सुधार के मार्ग पर चलना प्रारंभ किया।

भारतेंदु हरिश्चंद्र का हिंदी साहित्य सेवा में अवतरण युग प्रवर्तक घटना सिद्ध हुई। इन्हीं के प्रभाव के कारण कवियों ने मातृभूमि प्रेम, स्वाधीनता और विदेशी वस्तुओं के व्यवहार जैसे विषयों को काव्य का विषय बनाकर राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा दिया। इस युग की राष्ट्रीयता क्षेत्र विशेष के दायरे में बँधी हुई थी। 'हमारो उत्तम भारत देश' (राधाचरण गोस्वामी), 'धन्य भूमि भारत सब भाँति की उपजावनि', आनंद अरुणोदय (प्रेमघन), 'विजयिनी विजय वैजयंती' (भारतेंदु), 'महापर्व' और 'नया संवत्' (प्रतापनारायण मिश्र), 'भारत बारहमासा' (कृष्णदास) शीर्षक कविताएँ राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित हैं।